सच्चाई

आशीष रायचूर

आज के संसार में लगभग सभी स्थानों पर भ्रष्टाचार, बेईमानी और रिश्वतखोरी आदि सामान्य बात समझी जाती है। संसार इसी प्रकार से चल रहा है क्योंकि उन्हें उतना ही सिखाया जाता है। वे इससे अधिक नहीं जानते हैं। तौभी यह बहुत दुख की बात है जब हम बेईमानी, अधार्मिकता और सच्चाई का अभाव परमेश्वर के लोगों के मध्य–हम–मसीहियों में देखते हैं, क्योंकि हमें तो कम से कम इससे बेहतर मालूम है कि कैसे चलना चाहिए।

हमें मालूम होना चाहिए कि कैसे सच्चाई, शुद्धता और धार्मिकता में चलें क्योंकि यह सब हम परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। यह तो और बुरी बात हो जाती है जब हम अधार्मिकता, बेईमानी और सच्चाई का अभाव पास्टरों, प्रचारकों, शिक्षकों और परमेश्वर के वचन के सेवकों के बीच पाते हैं। हममें से प्रत्येक को उस बिन्दु तक आना चाहिए जहाँ हम सच्चाई, ईमानदारी और खराई के प्रति समर्पित हों उन सब कामों में जो हम करते हैं, और यह पुस्तक उन सब गुणों को हमारे अन्दर विकसित करने का प्रयास करेगी।

आशीष रायचूर

© आशीष रायचूर, पास्टर
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2009 जानवरी

प्रबन्ध सम्पादक/मुख्य प्रकाशक : वैलेन्टीना हूबर्ट
सहायक सम्पादक : आरती रेचल यशायाह
अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

पत्राचार का पताः
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
सोभा जेड A 216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का निशुल्क वितरण ऑल पीपुल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा सम्भव हुआ है।

सच्चाई

विषय-वस्तु

परिचय 1

1. सच्चाई के विषय में निर्देश 4

2. परमेश्वर हमारी सच्चाई को जांचता और जानता है (अथवा इसके अभाव को भी!) 8

3. फिर हम क्यों अपनी सच्चाई हेतु समझौता करते हैं? 10

4. बेईमानी के परिणाम 14

5. सच्चे मनुष्य की आशीषें 18

6. प्रत्युत्तर–छुटकारा, पश्चाताप्, आत्मत्याग और पवित्रीकरण 21

परिचय

हम सभों के पास संसार में हो रहे भ्रष्टाचार के विषय में बताने हेतु बहुत सी कहानियाँ हैं, विशेषकर जब हम सरकारी कार्यालयों अथवा अन्य स्थानों पर जाते हैं। हमारा सामना भ्रष्टाचार, बेईमानी और रिश्वतखोरी से लगभग सभी जगह होता है। ऐसा लगता है कि यह एक नियम सा बन गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि बेईमानी, धोखा और झूठ सभी जगह स्वीकार्य है जब तक कोई विशेष कारण न हो।

तौभी, यह बहुत दुख की बात है जब हम बेईमानी, अधार्मिकता और सच्चाई का अभाव परमेश्वर के लोगों के बीच में देखते हैं–हम में–क्योंकि हमें यह ठीक से मालूम होना चाहिए कि हमें कैसे सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता और धार्मिकता में चलना चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं और यह इन सब बातों के विषय हमें सिखाता है। यह तब और भी बुरी बात हो जाती है जब हम अधार्मिकता, बेईमानी और सच्चाई का अभाव पासबानों, प्रचारकों, वचन के शिक्षकों और सेवकों में पाते हैं। मुझे निश्चय है कि हममें से बहुत लोग ''मसीही'' रिश्वतखोरी, झूठ, बेईमानी आदि के विषय में बहुत सी कहानियाँ जानते होंगे।

जब हमने ऑल पीपुल्स चर्च की स्थापना की और बंगलौर में पास्टर की सेवा आरम्भ की तब हमारे मन में एक बात थी कि प्रत्येक मसीही सच बोलेगा। ऐसा शायद हमने इसलिए सोचा था कि इससे पहले हमने छोटे समुदायों में काम किया था जो प्राय: सच बोलते थे और हमने इसी प्रकार लोगों पर विश्वास किया। अत: इस विचार को हमने अपने साथ रखा। फिर भी हमें यह देखकर दुख हुआ कि मसीही लोग झूठ बोलते हैं। तब हमारा तुरन्त प्रत्युत्तर था अविश्वास–''मसीहियों को झूठ नहीं बोलना चाहिए, और अधार्मिकता और सच्चाईरहित व्यवहार नहीं करना चाहिए।''

हम ऐसे पासबानों और परमेश्वर के सेवकों से भी मिले हैं जो बेईमान हैं। मैं ऐसी बहुत सी घटनाओं को स्मरण करता हूँ जहाँ हमने उनके 'कार्यों' के विषय 'अच्छी' खबर सुनी और फोटो भी देखी। कई बार हमने उनके काम के लिए कई हजार रुपयों के चैक भी लिखे केवल उनका विश्वास करके। परन्तु बाद में हमारी आंखें खुलीं कि हम लोगों पर ऐसे ही विश्वास नहीं कर सकते। तब हम ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचे कि हम तब तक लोगों पर विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि हम पूर्ण रूप से सन्तुष्ट न हो जाएं। हमें अपनी सोच को बदलना पड़ा। तब हम ऐसी स्थिति में आए कि हम लोगों पर पूर्ण विश्वास करने से पहले हम उनके काम के विषय में पूरी जानकारी लेकर उसका विश्लेषण करेंगे।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य यह है हम अपने अन्दर परमेश्वर के लोग होने के नाते इन बातों पर ध्यान दें :

- सच्चाई के प्रति समर्पण
- ईमानदारी के प्रति समर्पण
- अपनी बातों में, अपने व्यापारों में, व्यवसायों और सभी कामों में जो हम करते हैं, उनमें खराई और धार्मिकता के प्रति समर्पित हों। ''चाहे कितनी भी कीमत न चुकानी पड़े हम धार्मिकता के प्रति समर्पित रहेंगे।''
- सच्चाई में चलने की आशीषों के प्रति जागृति हों। हम ऐसा महसूस भी नहीं करते कि झूठ बोलने के कारण हम परमेश्वर की आशीषों को खो देते हैं।
- प्रभु के प्रति समर्पित हों और उसे अनुमति दें कि वह उन बन्धनों को तोड़े जो हमें बांधे हुए हैं ताकि हम जीवन के इन क्षेत्रों में बदले जा सकें। हममें से कुछ इन बन्धनों में हैं और चाहते हुए भी सच नहीं बोल पा रहे हैं। यदि ऐसी बात है, तो हमें उन झूठी और धोखा

देने वाली आत्माओं से स्वतन्त्र होने की आवश्यकता है जिनके विषय में बाइबल हमें बताती है।

हममें से प्रत्येक को उस बिन्दु तक पहुँचना चाहिए जहाँ हम सच्चाई, ईमानदारी और खराई के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हों, उन सब कामों में जिन्हें हम करते हैं।

1

सच्चाई के विषय में निर्देश

बाइबल हमें सिखाती है कि हम सच्चाई, खराई और ईमानदारी में चलें।

छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है: अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पांव, झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य (नीतिवचन 6:16-19)।

नीतिवचन 6:16-19 में उन बातों की सूची है जिससे परमेश्वर घृणा करता है। इनमें झूठ बोलना, बुरी युक्ति बनना, झूठी गवाही देना और नफरत फैलाना शामिल है। उदाहरण के लिए, यदि एक कम्पनी का लेखाधिकारी संख्याओं के साथ खेल करके एक ऐसी रिपोर्ट बनाता है जो सत्य को प्रकट नहीं करती है, तो वह एक तरीके से बुरी युक्ति बनाता है। यदि हम कहते हैं कि हमने कुछ देखा है जबकि वास्तव में वह नहीं देखा, तब यह झूठी गवाही देना है, तो यह भी उसकी दृष्टि घृणित है।

झूठों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है (नीतिवचन 12:22)।

परमेश्वर ‘‘झूठे होंठों’’ को नजर अन्दाज नहीं करेगा और न यह समझकर क्षमा करेगा कि यह चरित्र की एक छोटी सी गलती है। सच्चाई यह है कि ‘‘यह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।’’ यह इस बात को प्रकट करता है कि वह इसे बिल्कुल भी सहन नहीं करता है। दूसरी ओर जो सच्चाई से जीते हैं उनसे वह प्रसन्न रहता है। यदि हम अपनी नौकरियों, अपनी धनसम्पत्ति और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी के प्रति समर्पित हैं तो बाइबल कहती है, ‘‘हम उसका आनन्द हैं।’’ जब हम सच्चाई पर चलते हैं तो वह बहुत प्रसन्न होता है। यदि हमारे मालिक हमें कुछ ऐसा करने के लिए कहते हैं जो सत्य नहीं है तो हमें चुनाव

करना है कि हम किसे प्रसन्न करना चाहते हैं, परमेश्वर को अथवा अपने मालिक को? यह चुनाव पूर्ण रूप से हमारे हाथ में है। हमें पूर्ण रूप से सच्चाई के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है।

तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना। झूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊँगा। घूस न लेना, क्योंकि घूस देखने वालों को भी अन्धा कर देती है, और धर्मियों की बातें पलट देती है (निर्गमन 23:6-8)।

कभी कभी यह कितने व्यंग्य की बात लगती है कि हम सोचते हैं कि सत्य की रक्षा हेतु हमें असत्य का सहारा लेना पड़ता है। यह बिल्कुल अनावश्यक है क्योंकि सत्य अपनी रक्षा स्वयं करता है और हमें अपने झूठ से इसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। इस स्थिति पर विचार करें जो काम पर प्रायः होती है—आपका एक सहकर्मी आपको फोन करके कहता है कि आप अपने मालिक को सूचित कर दें कि वह बीमार है, यद्यपि वह बिल्कुल ठीक है लेकिन वह कुछ और काम के लिए छुट्टी लेना चाहता है। आप ऐसा करने के लिए तैयार हो जाते हैं और अपने मालिक से झूठ बोलते हैं। आप ऐसा सोचते हैं कि आप अपने मित्र की सहायता कर रहे हैं परन्तु आप वास्तव में झूठ बोल रहे हैं, क्योंकि आपको मालूम है कि आपका मित्र बीमार नहीं है परन्तु अपने व्यक्तिगत काम के लिए गया है। सच्चाई यह है कि आप अपने मित्र के झूठ में शामिल हो गए हैं। निर्गमन 23:7 हमें बताया है कि ''हम झूठी बातों से दूर रहें।'' इन बातों में आप शामिल न हों। इतनी हिम्मत जुटा कर अपने मित्र से कहें कि वह मालिक से सत्य बोले। हम कभी इन बातों में शामिल हो जाते हैं और सोचते हैं कि हम अपने मित्रों की भलाई कर रहे हैं। नहीं, हम उनकी भलाई नहीं कर रहे हैं।

अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले (भजन संहिता 34:13)।

हमें अपनी जीभ को नियन्त्रित करने के लिए कहा गया है (भजन संहिता 34:13)। स्मरण रखें कि हमारी जीभ हमारे नियन्त्रण में है शैतान

के नियन्त्रण में नहीं। कुछ लोग यह कहकर बहाना बनाते हैं ''शैतान ने हमसे झूठ बुलवा दिया है।'' सच्चाई यह है कि उन्होंने झूठ बोला है। कुछ लोग शैतान के बन्धनों में हो सकते हैं जहाँ शैतान उन्हें उस बिन्दु तक प्रभावित करता है कि वे असीमित झूठ बोलते रहते हैं परन्तु ये बन्धन यीशु के नाम में टूट सकते हैं। फिर भी अन्ततः हमारी जीभें हमारे नियन्त्रण में हैं। आइए हम शैतान, अपने माता पिता, अपने रिश्तेदारों अथवा उस वातावरण को दोष न दें जिसमें हम पले-बढ़े हैं क्योंकि हमारी झूठ बोलने की आदत है! हमें केवल अपनी जीभों को नियन्त्रण में रखना सीखना है।

एक और बहाना हम झूठ बोलते समय करते हैं वह यह है, ''परमेश्वर मेरा हृदय जानता है। मैं तो बहुत सच्चा हूँ यद्यपि मैंने यह छोटा सा झूठ बोला है।'' और हम इसकी चिन्ता नहीं करते कि इससे लोगों के जीवनों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। परन्तु नया नियम हमें सिखाता है कि हम न केवल परमेश्वर की दृष्टि में ईमानदार बनें परन्तु मनुष्य की दृष्टि में भी। केवल इतना कहने से काम नहीं चलेगा, ''परमेश्वर मुझे देखता है और मेरा हृदय जानता है।'' बाइबल यह भी कहती है कि हमें मनुष्यों के समक्ष भी ईमानदार रहना है। ''**बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो**'' (रोमियों 12:17)। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति बहुत जरूरतमन्द है, तब वह किसी की वस्तु चुराकर आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता और यह बहाना बना दे, ''परमेश्वर मुझे और मेरी परिस्थिति को जानता है। मैं शायद ऐसा नहीं करता, परन्तु मेरी बहुत बड़ी जरूरत के लिए मैंने ऐसा किया है।'' परमेश्वर चोरी को यह समझकर क्षमा नहीं करेगा कि जरूरत बहुत बड़ी थी, न ही मनुष्य इसे क्षमा करेगा।

क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं, हम उनकी चिन्ता करते हैं (2 कुरिन्थियों 8:21)।

पौलुस बताते हैं कि उन्होंने दान कैसे जमा किया और किस प्रकार उसका उपयोग किया जो उसे विभिन्न कलीसियाओं ने दिया था। उसने अपने आपको गम्भीरता से लिया। उसने उस धन को परमेश्वर और उन

लोगों के सामने जिन्होंने उसे दिया था बड़ी जिम्मेदारी के साथ प्रयोग किया। पौलुस चाहते थे कि उनके सारे व्यवहार न केवल परमेश्वर के सामने परन्तु मनुष्यों के सामने भी ईमानदारी से प्रकट हों।

इसी लिए ऑल पीपुल्स चर्च में हम अपने सारे खातों की पुस्तकों को व्यवस्थित रखते हैं। हम प्रत्येक बिल और आर्थिक लेन-देन को ठीक से रखते हैं ताकि यदि हमसे कोई पूछे, तो हमारे पास सब कुछ स्पष्ट हो। हम इसमें अतिरक्ति प्रयास करते हैं ताकि हम परमेश्वर और मनुष्य दोनों के प्रति जवाब देने की स्थिति में हो सकें।

इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं (इफिसियों 4:25)।

यह अजीब सी बात लगती है कि हम एक दूसरे से कलीसिया में ''प्रभु की स्तुति हो'' कहते हैं और फिर भी एक दूसरे से झूठ बोलते हैं। बाइबल हमें बताती है कि हम झूठ बोलना छोड़कर एक दूसरे से सच बोलें–हम सब मसीह की देह के अंग हैं और हमें एक दूसरे से सच बोलना चाहिए।

अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें (1 पतरस 2:12)।

यहाँ तक कि जब संसार के लोग हमें देखें तो वे भी जान लें कि हम ईमानदार लोग हैं। इसी स्तर तक हमें सच्चाई और ईमानदारी अपने जीवनों में कामय रखनी चाहिए क्योंकि जब वे हमें देखें तो उन्हें उँगली उठाने का अवसर न मिले।

परमेश्वर ''झूठे होंठों'' को मात्र यह समझकर क्षमा नहीं करेगा कि यह मात्र चरित्र की बात है। सच्चाई यह है कि यह ''परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है'', इसका अर्थ यह है कि वह इसे सहन नहीं करता है।

2

परमेश्वर हमारी सच्चाई को जाँचता और जानता है (अथवा इसके अभाव को भी!)

परमेश्वर हमारी सच्चाई को जानता और जाँचता है। हमारे पास्टर हमारी सच्चाई के स्तर को कभी नहीं जान सकते। यहाँ तक कि हम अपने बायोडाटा में झूठ लिखें और रविवार प्रातः प्रभु की उपासना करें, हमारे पास्टर यह कभी नहीं जान पाएंगे। परन्तु परमेश्वर जानता है। वह हमारी सच्चाई और इसकी कमी जानता है। राजा दाऊद कहता है, **''यहोवा समाज समाज का न्याय करता है; यहोवा मेरे धर्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे''** (भजन संहिता 7:8 ब)।

दाऊद वचन में प्रार्थना करता है: **''हे यहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूँ, और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है। हे यहोवा, मुझको जाँच और परख, मेरे मन और हृदय को परख''** (भजन संहिता 26:1,2)। कितनी मजबूत प्रार्थना है! क्योंकि दाऊद सच्चाई से चलता रहा, वह यह प्रार्थना कर सकता—प्रभु मेरा बदला चुका। प्रायः हम कहते हैं, ''यदि मैं अपने मालिक से कहूँ कि मैं झूठ नहीं बोलता हूँ तो मेरी नौकरी छूट जाएगी।'' प्रभु की स्तुति हो यदि आप ऐसी स्थिति में हैं, जहाँ आपकी खराई के कारण आपकी नौकरी छूट जाती है, क्योंकि तब आप दाऊद की तरह प्रार्थना कर सकते हैं और कह सकते हैं कि प्रभु मेरा बदला चुका!

परन्तु यदि हम सच्चाई में नहीं चलते तब हम परमेश्वर से बदला चुकाने हेतु प्रार्थना नहीं कर सकते हैं। भजनकार की तरह हम भी कह सकें कि हम सच्चाई में चले हैं, ईमानदारी से काम किया है और वही किया जो ठीक है और तब प्रभु से कहें कि वह हमारे युद्ध लड़े।

यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूँ? फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूँ? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं? (यिर्मयाह 23:23,24)।

परमेश्वर एक रूचिकर प्रश्न वचन में पूछते हैं–''क्या कोई अपने आप को गुप्त स्थानों में छिपा सकता है ताकि मैं उसे न देखूँ?'' (यिर्मयाह 23:24 ब)। हम अपने आप और अपने बेईमानी के कामों को उससे एक क्षण के लिए भी नहीं छिपा सकते हैं। जी हाँ, कोई मानव प्राणी हमें न देख रहा हो परन्तु ऐसा कोई भी गुप्त स्थान इस पृथ्वी पर नहीं है जहाँ हम जा सकें, जहाँ परमेश्वर हमें न देख रहा हो। हम अपने कम्प्यूटर्स के सामने बैठ कर बहुत सा झूठ मासिक रिपोर्ट में लिख रहे हों और सोचते हैं कि कोई कुछ नहीं जानता है। परन्तु स्मरण रखें परमेश्वर देखता है! वह हमारे हृदय की सच्चाई को जानता और जाँचता है।

और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं (इब्रानियों 4:13)।

कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे हम परमेश्वर से छिपा सकें। हमें उस बिंदु तक पहुँचना है जहाँ हमें परमेश्वर का पवित्र भय लगे और इससे हमें खरा और सच्चाई का जीवन जीने में सहायता मिलेगी।

कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे हम परमेश्वर से छिपा सकें।

3

फिर हम क्यों अपनी सच्चाई हेतु समझौता करते हैं?

हम में से बहुत से लोग उन सब बातों से परिचित हैं जिन्हें हम पढ़ चुके हैं। बचपन से ही हमें सिखाया गया है कि झूठ बोलना गलत है और हमें ईमानदारी व सच्चाई से जीवन जीना चाहिए। हम इन वचनों से भी परिचित होंगे जो अभी तक इसमें लिखे गए हैं। शायद हमने उन्हें अपनी बाइबल में रंग के द्वारा चिन्हित भी किया होगा!

परन्तु हमें अपने आप से ये प्रश्न पूछने चाहिए :

- फिर भी हम क्यों झूठ बोलते हैं?
- ऐसा क्यों है कि हम इतने लम्बे समय से मसीही हैं, फिर भी अपने अपने कामों, सेवाओं और अन्य बातों में ईमानदार नहीं हैं? प्रायः हम लोगों को बताते हैं कि हम एक विशेष कार्य के लिए पैसे जमा कर रहे हैं और बाद में उस पैसे का उपयोग किसी अन्य काम में करते हैं।
- क्यों परमेश्वर के लोग, जो ये सब बातें जानते हैं, और इन सब बातों के विषय में परमेश्वर के वचन में पढ़ा है, फिर भी बेईमान हैं?

कुछ कारण हैं जिनके चलते हम लगातार बेईमान बने रहते हैं। यही वे कारण हैं जो हमें अपने जीवनों में सच्चाई, ईमानदारी और खराई से चलने से रोकते हैं। यहाँ कुछ सम्भावित कारण हैं:

जीवन में परमेश्वर का असली भय का न होना—परमेश्वर के अनुग्रह को यूँ ही लेना

कभी कभी हम ऐसे पदों से बहुत अधिक परिचित हो जाते हैं जो परमेश्वर की क्षमा, दया, प्रेम, और भलाई प्रकट करते हैं कि हम इन्हें

बहुत हल्के रूप में लेते हैं। हम ऐसा महसूस करते हैं कि यदि हम लगातार झूठ बोलेंगे और बेईमानी करते जाएंगे तौभी परमेश्वर हमें क्षमा कर देगा! हमारे जीवनों में परमेश्वर का असली भय नहीं होता है। अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं (नीतिवचन 16:6)। हमारे जीवनो में केवल परमेश्वर का असली भय ही हमें बुराई से दूर रख सकता है। हमें परमेश्वर का भय और उसका आदर इतना करना चाहिए ताकि हम–बेईमानी, झूठ और अधार्मिकता जैसे पापों में न पड़ें। जब परमेश्वर का भय नहीं होता तो हम अपनी इच्छानुसार सब कुछ करते हैं। यह सच है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह पर ही आश्रित हैं परन्तु इसके साथ प्रभु का भय भी हमारे हृदयों में होना चाहिए!

यह दुख की बात है कि कुछ परमेश्वर के सेवकों और प्रचारकों के जीवनों में परमेश्वर का भय नहीं हैं और जब वे पुलपिट से नीचे आते हैं तो सब प्रकार के झूठ और गलत काम करने से नहीं झिझकते हैं। जब हम, परमेश्वर के सेवकों में भी प्रभु का भय नहीं है तो हम अन्य लोगों को परमेश्वर का भय मानना कैसे सिखा सकते हैं? हमें ऐसे स्थान पर आने की आवश्यकता है जहाँ हमें परमेश्वर का भय हो!

मनुष्य का भय

कभी कभी हम मनुष्यों के डर के कारण झूठ बोलते हैं–हमें डर लगता है कि यदि उन्हें सच बताएंगे तो वह क्या सोचेंगे। हमें मनुष्य के भय के ऊपर प्रबल होना है। हमें सत्य बोलने और धार्मिकता में चलने के लिए हिम्मती होना चाहिए। चाहे हम किसी के साथ भी व्यवहार क्यों न कर रहे हों।

परिणामों का भय

''यदि मैं इस परिस्थिति से बाहर आने के लिए झूठ नहीं बोलूँगा तो इसी में पड़ा रहूँगा, अत: इससे निकलने के लिए मुझे झूठ बोल देना

चाहिए''—यह एक और बहाना है लोगों के पास झूठ बोलने का। हमें परिणामों की चिन्ता किए बिना सच्चाई में चलने का हियाव होना चाहिए। याद रखें, जब हम ईमानदारी से चलते हैं तब परमेश्वर हमारी ओर होता है!

प्रतिष्ठा/गर्व

कभी कभी हम अपनी प्रतिष्ठा अथवा गर्व को बचाने के लिए झूठ बोलते हैं जो जोखिम में पड़ गए हैं। उदाहरण के लिए, जब हमसे कोई पूछता है कि आपने परीक्षा पास कर ली तो हम सरलता से कहते हैं ''हाँ'' यद्यपि यह सत्य नहीं है।

समर्पण की बजाय सुविधानुसार जीना

हम समर्पण की बजाय सुविधानुसार जीना पसन्द करते हैं क्योंकि समर्पण के अनुसार जीने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है। जब हम हर समय सत्य बोलने की महत्वता को समझते हैं तो हमें सच बोलना चाहिए, चाहे इसकी कितनी भी बड़ी कीमत क्यों न हो। सुविधा कहती है, ''यदि सच बोलना आसान होगा तभी मैं सच बोलूंगी, यदि यह कठिन होगा तो मैं झूठ बोलकर निकल जाऊँगी।'' कृपया अपने आप को बताएं कि आप दृढ़ विश्वास के साथ जीएंगे। हमें दृढ़ विश्वास के साथ जीना है न कि सुविधा के अनुसार। हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि हम समर्पित पुरुष और महिला हैं जो सच्चाई और ईमानदारी से जीते हैं।

किसी को अप्रसन्न करने/चोट पहुँचाने का डर

कभी कभी लोग इस लिए झूठ बोलते हैं कि कहीं उस व्यक्ति को जिससे वे बातें कर रहे हैं, चोट न पहुँचे। झूठ तो झूठ है—चाहे आपका इरादा कितना भी अच्छा क्यों न हो!

लीपापोती करने के द्वारा भला बनने का प्रयास करना

कभी कभी लोग अपने मित्रों के प्रति भले बनने के लिए झूठ बोलते हैं। एक झूठ, झूठ है और झूठ है—चाहे आप कितने भी विश्वासयोग्य क्यों न हों। स्मरण रखें: सत्य अपनी रक्षा अपने आप कर सकता है। सत्य की रक्षा हेतु असत्य की आवश्यकता नहीं है।

केवल परमेश्वर का असली भय ही मनुष्य को बुराई से दूर रख सकता है। हम उसका इतना भय मानें और आदर करें कि बेईमानी, झूठ और अधार्मिकता के पाप में न पड़ें। जब हममें परमेश्वर का भय नहीं होता, तब हम अपनी इच्छानुसार काम करते हैं।

4

बेईमानी के परिणाम

एक और बात है जिसके कारण हम सच्चाई से समझौता कर लेते हैं वह यह है कि हम इसके गम्भीर परिणामों को वास्तव में समझते नहीं हैं। कई बार हम सोचते हैं कि हम प्रभु के पास जाएंगे और उससे क्षमा मांगेगे और सब कुछ ठीक हो जाएगा। जी हाँ, परमेश्वर हमें क्षमा करता है परन्तु हमें इसके परिणामों में से होकर गुजरना पड़ेगा। परमेश्वर सारे परिणामों को नहीं बदलता है! हमने जो बोया है उसके परिणामों को काटना पड़ेगा। हमें बेईमानी के परिणामों को ठीक से समझने की आवश्यकता है। आइए कुछ वचनों को देखें:

झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा (नीतिवचन 19:5)।

कई बार हम बचने के लिए झूठ बोलते हैं। परन्तु हम नहीं समझते कि परमेश्वर का वचन कहता है, "और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा" (नीतिवचन 19:5ब)। हम प्रसन्न हो सकते हैं कि हम मुसीबत से बच निकले परन्तु हम नहीं समझते कि देर-सबेर इसमें फंस जाएंगे जब तक कि हम पश्चाताप करके अपने जीवन की बातों को ठीक न कर लें।

- प्राय: हम कठिन परिस्थितियों से बचने के लिए झूठ बोलते हैं यह न जानते हुए कि हम इससे भी बड़े जाल में अपने आप को फंसा रहे हैं।

चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु पीछे उसका मुंह कड़वाहट से भर जाता है (नीतिवचन 20:17)।

चोरी की रोटी आरम्भ में मीठी लग सकती है, परन्तु यदि यह चोरी से प्राप्त की गई है तो बाइबल कहती है कि "मुँह कड़वाहट से

भर जाएगा'' (नीतिवचन 20:17ब)। यह धोखा है कि कोई अपने बायोडाटा में छः वर्ष का अनुभव लिखे जबकि उसके पास केवल छः महीने का ही अनुभव है। वह धन जो बेईमानी से कमाया गया है आरम्भ में मीठा लगेगा लेकिन बाद में कड़ुवा लगेगा। नीतिवचन 21:6 भी इसी सत्य को प्रकट करता है–''जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है, उसके ढूंढ़ने वाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं।'' वह धन जो हम बेईमानी से कमाते हैं वह हमें मृत्यु और विनाश की ओर ले जाता है और वह धन शीघ्र गायब हो जाता है।

- बेईमानी ''शीघ्र और सरल'' तरीका प्रतीत होता है लेकिन इसके परिणाम हमें शीघ्र भुगतने पड़ते हैं!

जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं (नीतिवचन 29:12)।

- जब एक अगुवा बेईमान होता है, तो उसके नीचे काम करने वाले सभी लोग उसके मार्ग का अनुसरण करते हैं!

अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए॥ तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। और यह इसलिये हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था (होशे 10:12,13)।

होशे 10:12,13, एक बहुत रूचिकर सत्य को प्रकट करता है। जब जब हम झूठ बोलते हैं तब तब हम अधार्मिकता बोते हैं, दुष्टता बोते हैं और देर–सबेर हम अपने झूठ का फल खाते हैं। झूठ अपना फल उत्पन्न करता है और हम इसमें से खाते हैं। अतः हमें यह समझना है कि झूठ और बेईमानी का एक परिणाम होता है।

- ''झूठ का फल'' होता है, प्रत्येक झूठ को जिसे हम बोते हैं उसका फल हमें मिलेगा!

तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)।

- जब हम झूठ बोलते हैं तब हम शैतान के कामों में शामिल होते हैं।

बाइबल कहती है कि झूठे लोग आग की झील में डाले जाएंगे–सबसे भयंकर परिणाम!

पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

बाइबल बताती है कि हम अनुग्रह के द्वारा विश्वास से बचाए गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान के पास आता है वह बचाया जाएगा और उसके लिए अनुग्रह, दया, क्षमा छुटकारा और प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है। फिर भी एक भयंकर परिणाम है जिसकी चर्चा स्वयं परमेश्वर ने की है–कि यदि हम झूठे हैं तो हमें नर्क में भेजा जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21)। शैतान झूठों का पिता है और उसमें कोई सच्चाई नहीं है (यूहन्ना 8:44)। अत: परमेश्वर झूठों से कहेगा, ''जाओ और अपने पिता के साथ रहो यदि तुम लगातार झूठ बोलते रहोगे। यह भयंकर परिणाम झूठों के लिए होगा जो सच नहीं बोलते हैं! हमें यह समझना है कि बेईमानी का परिणाम होता है–इस वर्तमान संसार में और आने वाले संसार में भी। इस लिए अब हमें परमेश्वर का पवित्र भय मानते हुए यह कहना चाहिए, ''परमेश्वर मैं दुष्टता बोना नहीं चाहता। मैं अपने झूठ का फल खाना नहीं चाहता हूँ। मैं अधार्मिकता और दुष्टता की कटनी काटना नहीं चाहता हूँ।''

- अन्तिम परिणाम–झूठे लोग नर्क में जाएंगे!

बेईमानी के परिणाम

- प्रायः हम कठिन परिस्थितियों से बचने के लिए झूठ बोलते हैं यह न जानते हुए कि हम इससे भी बड़े जाल में अपने आप को फंसा रहे हैं।
- बेईमानी ''शीघ्र और सरल'' तरीका प्रतीत होता है लेकिन इसके परिणाम हमें शीघ्र भुगतने पड़ते हैं।
- जब एक अगुवा बेईमान होता है, तो उसके नीचे काम करने वाले सभी लोग उसके मार्ग का अनुसरण करते हैं!
- ''झूठ का फल'' होता है, प्रत्येक झूठ को जिसे हम बोते हैं उसका फल हमें मिलेगा।
- जब हम झूठ बोलते हैं तब हम शैतान के कामों में शामिल होते हैं।
- अन्तिम परिणाम–झूठे लोग नर्क में जाएंगे!

5

सच्चे मनुष्य की आशीषें

उन लोगों के लिए अद्भुत आशीषें हैं जो खराई, धार्मिकता और सच्चाई से चलते हैं।

आशीषें और पक्ष

क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा; हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा (भजन संहिता 5:12)।

यह कल्पना कीजिए कि आप साक्षात्कार के लिए जा रहे हैं और परमेश्वर के पक्ष पाने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। बाइबल कहती है कि परमेश्वर धर्मी का पक्ष लेता है। यदि आपने अपने बायोडाटा में झूठ लिखा है तो आप परमेश्वर के पक्ष को भूल जाएं क्योंकि वह कहता है कि वह धर्मी को आशीष देगा और धर्मी के चारों ओर रक्षा करेगा–अधर्मियों और बेईमानों की नहीं परन्तु केवल खरे लोगों की। तो हमें क्या करना चाहिए? अत: बजाय झूठे छ: वर्ष का अनुभव लिखने के आप सत्य लिखें कि आपको काम करने का केवल छ: माह का ही अनुभव है और हियाव के साथ परमेश्वर से कहें कि हम तुझ पर, आश्रित हैं कि तू हमें वह नौकरी दे जो छ: वर्ष के अनुभव वाले को मिलती है। यह ठीक काम है जिसे आप कर सकते हैं–बजाय अपने बायोडाटा में झूठी सूचना देने के। परमेश्वर केवल तभी अपना पक्ष आपको देगा जब वहाँ धार्मिकता होगी।!

संरक्षण और प्रार्थना के उत्तर

भजनकार कहता है, "खराई और सीधाई मुझे सुरक्षित रखे, क्योंकि मुझे तेरी ही आशा है" (भजन संहिता 25:21)। कितना अच्छा स्थान है सुरक्षा का–और यह कहने का कि हम सच्चाई और खराई से चले हैं और यह कि हम जानते हैं कि हमें सुरक्षा और संरक्षण मिलेगा!

यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं (भजन संहिता 34:15)।

धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है (भजन संहिता 34:17)।

धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है (भजन संहिता 34:19)।

प्रार्थना का उत्तर और सुरक्षा धर्मियों के लिए है। यद्यपि हमें बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है जब हम यह कदम उठाते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें प्रत्येक मुसीबत से छुड़ाएगा!

स्थाई सुरक्षा

सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है (नीतिवचन 12:19)।

सत्य जीवित रहता है। झूठ से आज का उद्देश्य हल हो सकता है परन्तु कल वह समाप्त हो जाएगा। हम उन पर भरोसा नहीं कर सकते। शायद पहले झूठ को बचाने के लिए हमें और झूठ बोलने पड़ेंगे। झूठ में कोई सुरक्षा नहीं है। फिर भी जब हम सच बोलते हैं, हम सुरक्षित महसूस करते हैं और हम सुरक्षित होते भी हैं। हमें अपने आपको बचाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्य स्वयं रक्षा करता है!

स्पष्टता/ज्योति

धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया गया है (भजन संहिता 97:11)।

जब हम धार्मिकता में चलते हैं तब हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर की ज्योति हमारे मार्गों पर चमकेगी। जब हम धार्मिकता में नहीं चलते तो हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि मार्ग में अंधेरा है और भविष्य अंधकारपूर्ण है। इसे ऐसा सोचें–जब जब हम झूठ बोलते हैं तब

तब हम परमेश्वर की ज्योति अपने जीवनों में बुझाते हैं और जब जब हम धार्मिकता में चलते हैं तब तब हम ज्योति 'जलाते' हैं ताकि हमें मार्ग स्पष्टता से दिख सके।

मीरास

धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके लड़केवाले धन्य होते हैं (नीतिवचन 20:7)।

जब हम सच्चाई में चलते हैं तब हम अपने बच्चों के लिए आशीषें छोड़ जाते हैं। इसके विपरीत, जब हम सच्चाई में नहीं चलते हैं तो अपने बच्चों के लिए श्राप छोड़ जाते हैं। वह मीरास जो हम अपने बच्चों के लिए छोड़ते हैं वह उस बात पर निर्भर है कि हम सच्चाई से चले हैं या नहीं।

सच्चे मनुष्य की आशीषें

- **बाइबल कहती है कि परमेश्वर धर्मियों का पक्ष करता है।**
- **प्रार्थनाओं का उत्तर और सुरक्षा धार्मियों के लिए है।**
- **जब हम सच बोलते हैं तो सुरक्षित महसूस करते हैं और सुरक्षित रहते भी हैं।**
- **जब हम धार्मिकता में चलते हैं, तब हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर की ज्योति हमारे मार्गों पर चमके।**
- **जब हम सच्चाई में चलते हैं तो हम अपने बच्चों के लिए आशीषें छोड़ जाते हैं।**

6

प्रत्युत्तर–छुटकारा, पश्चाताप्, आत्मत्याग और पवित्रीकरण

झूठ बोलने वाली आत्मा के बन्धन को तोड़ें

हमें केवल सत्य को जानने की ही आवश्यकता नहीं है लेकिन आगे बढ़ कर उसे अपने जीवनों में लागू करने की आवश्यकता है। हम में से कुछ ऐसे हो सकते हैं जिनका दूसरा स्वभाव ही झूठ बोलने का हो सकता है और आपको पता भी नहीं है कि ऐसा क्यों है। बाइबल कम से कम दो स्थानों में झूठ बोलने वाली आत्माओं के विषय चर्चा करती है (1 राजा 22:22, 23; 2 इतिहास 18:21, 22)। इसका अर्थ है कि ऐसी दुष्टात्माएं हैं जो झूठ को बढ़ावा देती हैं और लोगों के चरित्रों और व्यवहारों को प्रभावित करती हैं। यह सम्भव हो सकता है कि आप नए जन्म प्राप्त, आत्मा से भरे और अन्य भाषाओं में बोलते हों फिर भी आप झूठ बोलने वाली आत्मा के बन्धन में हो सकते हैं। परमेश्वर को ढूँढ़े और इस बन्धन को तोड़कर स्वतन्त्र हो जाएं!

झूठ बोलने के प्रति अपने व्यवहार को बदले

धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है (नीतिवचन 13:5)।

झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूँ, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ (भजन संहिता 119:163)।

यद्यपि हममें से बहुत लोग यह जानते हैं कि बेईमानी परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य नहीं है, फिर भी हम अपने और दूसरों के जीवनों में इसे सहन करते रहते हैं। हम झूठ और बेईमानी को सहन न करें। हम लोगों के प्रति असहनीय नहीं बल्कि झूठ और बेईमानी के व्यवहार के प्रति असहनीय बनें। हमें झूठ से घृणा करना है। बाइबल कहती है, ''एक

धर्मी व्यक्ति झूठ से घृणा करता है'' (नीतिवचन 13:5ब)। हमें झूठ के प्रति अपना व्यवहार बदलने की आवश्यकता है। आइए हम परमेश्वर के अनुग्रह से झूठ को अपने जीवन से अलग करें। आइए यह दृढ़ निश्चय करें कि हम सत्य बोलेंगे चाहे कितनी भी चोट क्यों न पहुँचे।

बेईमानी का साथ देने से इन्कार करें

जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने बना न रहेगा (भजन संहिता 101:7)।

दूसरे लोगों की बेईमानी में शामिल न हों। यह इतना सच है कि जब हम लोगों के साथ विभिन्न रूप से साझेदारी में काम करते हैं–चाहे कार्य के स्थान में या कहीं अन्य स्थान पर। कभी कभी हम अन्य लोगों को झूठ बोलते हुए देखते हैं तो हम उनके साथ मिल जाते हैं और बजाय उनका बहिष्कार करने के हम उसके साथ चलते रहते हैं। हम यह मान लेते हैं कि यह झूठ तो उस व्यक्ति का है और चूंकि हमने झूठ नहीं बोला है तो हम साफ हैं। परन्तु सत्य यह है कि हम उस व्यक्ति का साथ दे रहे हैं तो हम उस झूठ में शामिल हैं।

मुझे याद है कि एक जवान व्यक्ति कलीसिया स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में हमारी सभी प्रार्थना सभाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों में एक वर्ष तक भाग लेता रहा। मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ यद्यपि मैंने उससे कभी कुछ नहीं कहा। एक रविवार सुबह मैंने ''समर्पण की सामर्थ'' विषय पर प्रचार किया और कहा कि हमें अन्य बातों के साथ-साथ सच्चाई के प्रति समर्पित होना है। कलीसिया की सेवा के बाद यह जवान व्यक्ति मेरे पास आया और मुझे बताया कि उसने विदेश में एक बाइबल कॉलेज में पढ़ाई करने हेतु आवेदन भेजा है। उसके वीज़ा और अन्य कामों के लिए वह चाहता था कि मैं उसे एक ऐसा पत्र लिखकर दूँ जिसमें यह लिखा हो कि पिछले एक वर्ष से वह ऑल पीपुल्स चर्च के साथ काम कर रहा है। वह यह भी चाहता था कि मैं यह लिखूँ कि ऑल पीपुल्स चर्च ही उसे बाइबल कॉलेज में भेज रहा है और अध्ययन पूरा करने के बाद वह वापस आकर इसी चर्च के साथ

सेवा करेगा। फिर भी जो कुछ वह जवान व्यक्ति पत्र में लिखवाना चाह रहा था उसमें से कुछ भी सत्य नहीं था। मुझे धक्का लगा। मैंने उससे कहा कि वह किसी और दिन मुझसे मिले! जब हम उससे मिले तो मैंने उसे बताया कि उसका निवेदन गलत है। मैंने उसे बताया कि हम वही पत्र उसे देंगे जिसमें लिखा है कि उसने लगातार इस कलीसिया में उपस्थिति दी है उस समय तक, और मैंने वह पत्र उसे दे दिया!

मैं यही बताना चाह रहा हूँ। हम लगातार चर्च जाते रहे हैं, बहुत से सन्देश सुनते रहे होंगे और फिर भी झूठ और इस प्रकार की बेईमानी में लगे होंगे। जब हम ऐसे लोगों से मिलते हैं तो अचम्भा करते हैं कि वे कौन से चर्च जाते हैं। और क्या उन्हें सच्चाई के विषय सिखाया जाता है। मैं ऐसी बहुत सी घटनाओं को जानता हूँ जहाँ मसीही भाई और बहन बेईमानी और अधार्मिकता में चलते हैं।

परन्तु अब वह सब बदलना चाहिए। हमें अब बेईमानी सहन न करके ऐसे बिन्दु पर आना है जहाँ हम हर प्रकार की बेईमानी से घृणा करें!

- झूठ बोलने वाली आत्मा का बन्धन तोड़ दें।
- झूठ बोलने के प्रति अपना आचरण बदलें।
- बेईमानी के साथ साझेदारी से बहिष्कार करें।

पवित्रीकरण की प्रार्थना

आइए हम पवित्रीकरण की प्रार्थना करें। भजनकार ने इस प्रकार प्रार्थना की—हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा, मेरे होठों के द्वार की रखवाली कर (भजनसंहिता 141:3)। और "मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर; और करुणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे" (भजन संहिता 119:29)।

परमेश्वर के समक्ष सच्चाई, धार्मिकता और ईमानदारी में बढ़ें। हम जानते हैं कि हम बचाए गए हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर तरस, दया और प्रेमी परमेश्वर है। आइए इस बात को हल्की बात न जानें। आइए परमेश्वर के अनुग्रह का दुर्पयोग न करें। हमें इस क्षेत्र में परमेश्वर का स्पर्श चाहिए क्योंकि विभिन्न बिन्दुओं तक हम सभी बेईमान रहे हैं।

प्रार्थना

"हे प्रभु झूठ बोलना हमसे दूर कर। मुझसे बेईमानी और झूठ को दूर करें। बेईमानी को सहन करना मुझसे दूर रहे और बेईमानी को मैं घृणित वस्तु जान सकूँ। प्रभु मेरे जीवन में एक शल्यचिकित्सा करें। अपनी वचन रूपी तलवार से गहराई से खोदकर इसकी जड़ तक जाएं। अब तक मैंने बेईमानी को अपने जीवन में सहन किया है, परन्तु अब मैं आपके पास आता हूँ और कहता हूँ कि अब इसका अन्त कर दे। इसकी जड़ पर कुल्हाड़ी रखें और इसे जड़ से समाप्त कर दें। मुझ से बेईमानी, झूठ और अधार्मिकता दूर करें। मैं एक ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो आपके सामने सच्चाई से चले और अपने पक्ष, आशीष और बदले के लिए आपकी ओर देखे। मैं एक ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो सच्चाई से चले और आपकी प्रसन्नता बने। चाहे लोग मुझसे नाराज ही क्यों न हो जाएं, इससे कोई मतलब नहीं है। हे मेरे परमेश्वर, मैं आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। मैं आपको आनन्द देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे आनन्दित और उत्तेजित रहें। प्रभु, केवल पवित्रात्मा की शुद्ध करने की सामग्री मेरे प्राणों की गहराई तक जा सकती है और इस पाप को दूर कर सकती है। मैं अपने आपको आपके सिंहासन के समक्ष रखता हूँ। प्रभु इस समय मुझमें काम करें। यह पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा करें। यीशु के नाम में मैं यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन!"

All Peoples Church & World Outreach, Bangalore, India, has extended its ministry by launching its Bible College & Ministry Training Center (APC-BC&MTC) in August 2005. APC-BC&MTC equips, trains and releases faithful men and women to impact villages, towns and cities in India and other nations, for Jesus Christ.

APC-BC&MTC offers 2 programs:

➢ The two-year and three-year **Bible College** programs are for full-time students and provides spiritual and practical ministry training along with academic excellence. The programs are designed to equip and empower students to successfully fulfil the call of God upon their lives. Upon completing the two-year program students will receive a **Diploma in Theology & Christian Ministry (Dip.Th.&CM).** The three-year program will lead to a **Bachelor's Degree in Theology & Christian Ministry (B.Th.&CM)**.

➢ The **Practical Ministry Training** is for graduates from the Bible College who desire to undergo practical training. Those completing one or more years receive a **Certificate in Practical Ministry** indicating the duration of involvement.

Classes are conducted in English. The faculty comprises of both trained and anointed teachers of the Word. All faculty and students have access to APC's Study Centre and Library (SC&L). The SC&L contains books, teaching tapes, videos, VCDs/DVDs and music CDs.

Publications from All Peoples Church

A Church in Revival
Ancient Landmarks
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders—Vol. 1
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Open Heavens
Our Redemption
The Conquest of the Mind
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
Understanding the Prophetic
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace

Gospel Booklets

He is Here
Love That Is Deeper Than Love Itself
What Can Wash Away My Sins?

ऑल पीपुल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपुल्स चर्च में हमारा दर्शन यह है कि हम बंगलौर शहर में नमक और ज्योति बनें और भारतवर्ष तथा संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज बनें।

यह हमारी ओर से आपके लिए एक भेंट है! यह मुफ्त है!

हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिली होगी।

हजारों प्रतियाँ आप जैसे लोगों को मुफ्त में बांटी जाती हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे आर्थिक सहयोगी बनें ताकि हम परमेश्वर का वचन बहुतों के साथ बांट सकें। आपके लगातार आर्थिक अनुदानों से हमें परमेश्वर का वचन अन्य लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। जैसा प्रभु आपको अगुवाई करे, आप ऑल पीपुल्स चर्च के सहयोगी बन सकते हैं। आप अपने दान चैक / डिमाण्ड ड्राफ्ट / मनीआर्डर ''ऑल पीपुल्स चर्च, बंगलौर'' के नाम भेज सकते हैं।

जब आप हमें लिखें तो आप अन्य प्रकाशनों हेतु भी निवेदन करें। हमें यह भी लिखें कि इस पुस्तक ने आपकी कैसे सेवा की है, साथ ही अपने प्रार्थना निवेदन और टिप्पणी भी भेजें। आप हमसे निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं:

ऑल पीपुल्स चर्च
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत
फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

भारत में ऑल पीपुल्स चर्च

इस समय ऑल पीपुल्स चर्च की शाखाएं भारत में निम्नलिखित शहरों में हैं :

ऑल पीपुल्स चर्च–बंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–थोकोटू, मंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–कल्याण, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पीपुल्स चर्च–विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)

ऑल पीपुल्स चर्च–सोनितपुर (आसाम)

ऑल पीपुल्स चर्च–बेरहामपुर (उड़ीसा)

ऑल पिपुल्स चर्च - नागपुर (महाराष्ट्र)

समय समय पर पूरे भारत में नई कलीसियाओं की स्थापना की जा रही है। वर्तमान सूची और ऑल पीपुल्स चर्च की सम्पर्क सूचना प्राप्त करने हेतु कृपया हमारे बेबसाइट www.apcwo.org पर देखें अथवा contact@apcwo.org पर ईमेल भेजें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट